पाठ 10. पृथ्वी का स्वर्ग

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मक विचार संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे चीज़ों व घटनाओं को देखने और करने का अभिनव तरीका अपना सकें। प्रस्तुत नाटक 'पृथ्वी का स्वर्ग' में दुलीचंद की धन के प्रति प्यास और एक भिखारिन की सच्चरित्रता को दिखाकर नाटककार रामकुमार वर्मा ने इसी दुनिया में स्वर्ग-नरक दिखाने की चेष्टा की है।

पाठ का सार

जीवन में एक तरफ़ ऐसे लोग हैं जो केवल धन के पीछे भागते हैं ऐसे लोग अपने भीतर और अपने आसपास एक तरह का दूषित वातावरण ही रचते हैं। दूसरी तरफ़ वे लोग हैं जो अभावग्रस्त जीवन स्थितियों में भी अपनी नीयत और सोच ठीक रखते हैं। ऐसे ही लोग धरती के जीवन को सुगंध देते हैं। यहाँ दुलीचंद के माध्यम से एक ऐसे वर्ग का चरित्र दिखाया गया है जिसका संबंध किसी जाति से नहीं है। उसके लिए कला व दूसरी मानवीय भावनाएँ व्यर्थ हैं। दुलीचंद ऐसा व्यक्ति है जो ऊपर से राम-राम रटता है, व्यवहार में मीठा बनता है और जब उसके धन की हानि होती है तो उसकी वास्तविकता सामने आती है। उसकी हर बात में झूठ की बदबू आती है। संदूक में उसने मैले कपड़ों में नोट छिपा रखे हैं। वहीं दूसरी ओर, हरा शाल जब अचल एक ज़रूरतमंद भिखारिन को दे देता है तो दुलीचंद पर मानो मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। नाटकीय परिवर्तन तब होता है जब बीमार बच्चे की माँ, वह भिखारिन दुलीचंद के शाल में लिपटे रुपयों को वापस यह कहते हुए दे देती है कि उसे पाप की कमाई नहीं चाहिए।
इसी घटनाक्रम से अचल में यह अटल विश्वास जन्म लेता है कि अभी बहुत कुछ बचा है, जो जीवन मूल्यों की रक्षा कर पाएगा। इसी विश्वास को अपने साथ लेकर वह दुलीचंद के घर से निकल जाता है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  नाटक को पढ़ाने से पहले कक्षा में, आज की जो धन ही के पीछे भागने की मनोवृत्ति पनप रही है, उसके बारे में बातचीत की जा सकती है। इसके बाद नाटक के संबंध में, इसके पात्रों के विषय में कुछ संकेत देकर इसे पढ़ने के लिए बच्चों में पात्र-विभाजन किया जाए। प्रत्येक पात्र व अन्य बच्चों से एक बार मौन पठन के लिए कहें ताकि वे नाटक की नाटकीयता को जी सकें। व्यक्तिगत विवेक से जुड़े प्रश्नों पर चर्चा की जा सकती है। जैसे अमुक पात्र के स्थान पर तुम होते, तो ऐसी स्थिति में क्या करते?

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 79** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - बच्चों को काल की परिभाषा व भेद बताएँ। वर्तमान काल, भूतकाल व भविष्यत् काल के विभिन्न उपभेदों की चर्चा करें।
  - सकर्मक क्रियाओं की पहचान का तरीका बताएँ। जब वाक्य में 'क्या' लगाकर प्रश्न पूछने पर उत्तर मिले तब क्रिया सकर्मक होती है, यह बताएँ।

क्रियाकलाप के लिए संकेत

- इस पाठ का वाचिक अभिनय कराते समय बच्चों को उचित हाव-भाव हेतु निर्देशन दिया जा सकता है।
- 'काला धन' के बारे में ज्वलंत उदाहरण देते हुए परिचर्चा की दिशा तय करवाएँ। टीवी समाचारों व अखबारों में छपे समाचारों को परिचर्चा में शामिल किया जा सकता है।